पाठ्यक्रम का निर्माण
एसोसिएट प्रोफेसर -
डॉ० करुणा राय द्वारा
किया गया -
Email- Karuna — 1812
@ yahoo.co.in.
Mobile No - 9431881251

बी०ए- पार्ट - I आनर्स
विषय - हिन्दी - द्वितीय पत्र
इकाई - चन्द्रगुप्त नाटक की (कथावस्तु)

जयशंकर प्रसाद ने 'चंद्रगुप्त' की रचना
1931 ई० में की थी। भारतीय इतिहास में यह
समय तीव्र राष्ट्रीय-संघर्ष का था। महात्मा गाँधी
के नेतृत्व में सारा भारत विदेशी शासन को मिटाने के लिये उठ खड़ा हुआ था। जयशंकर
प्रसाद ने भारतीय मानस में नवीन स्फूर्ति और जोश भरने के लिए इतिहास के
कुछ सुनहरे पन्ने नाटकों के रूप में हमारे सामने रखे। गुप्तकाल भारतीय इतिहास
का स्वर्ण काल है। वहाँ से उन्होंने 'स्कन्दगुप्त' को हमारे सामने प्रस्तुत किया, तो मगध
के गौरव 'चंद्रगुप्त' के जीवन संघर्ष को भी नाटक में साकार किया। वे इतिहास पाठकों
के समक्ष इसलिये नहीं ला रहे थे कि उन्हें पाठकों को जानकारी देनी थी। वे यह
बताना चाह रहे थे कि भारत में पूर्व में भी विदेशी आक्रमणकारी आये
थे और भारतीयों ने सफलतापूर्वक उन्हें खदेड़ दिया। और अगर कभी
वे पददलित हुए (मुगलशासन के दौरान) तो, यह उनकी आपसी फूट का परिणाम
था। 'चंद्रगुप्त' के प्रथम अंक के प्रथम दृश्य में ही वे प्रश्न खड़ा करते हैं -
"व्यक्तिगत मान के लिये तो तुम प्रस्तुत हो, क्योंकि तुम मालव हो और
यह मागध; यही तुम्हारे मान का अवसान है न?" आगे वे निर्दिष्ट करते हैं कि
भारतीयों का आत्मसम्मान तभी सुरक्षित रहेगा जब वे जाति और क्षेत्र में
न बँटकर राष्ट्र के बारे में सोचें।
"मालव और मागध को भूलकर जब तुम
आर्यावर्त का नाम लोगे तभी वह मिलेगा। क्या तुम देखते नहीं हो कि आगामी
दिवसों में आर्यावर्त के सब स्वतंत्र राष्ट्र (राज्य) एक के अनंतर
दूसरे विदेशी विजेता से पददलित होंगे।"
इसी मूल मंत्र को ध्यान में रखकर जयशंकर
प्रसाद ने चंद्रगुप्त नाटक का वस्तु तैयार किया है। इसमें विदेशियों से भारत
का संघर्ष और उस संघर्ष में भारत की विजय को दिखाया गया है। यहाँ
ध्यान देने योग्य बात यह है कि इसमें पर्वतेश्वर को अकेले लड़ने पर हार का
सामना करते हुए उसका अपमान होना चित्रित है तो क्षुद्रकों मालवों की संयुक्त
सेना का नेतृत्व करते हुए चंद्रगुप्त को विजयी घोषित किया गया है। यूनान
से विश्व विजय का स्वप्न लेकर आयी सिकंदर की सेना का विजय अभियान
चंद्रगुप्त के द्वारा ध्वस्त हुआ। राष्ट्रीयता की भावना को उभारा और उनका
विस्तार करने का श्रेय चंद्रगुप्त को दिया गया है। सिकंदर की सेना को भारत
से वापस करने के पश्चात चंद्रगुप्त नंद को परास्त कर मगध पर अपना
आधिपत्य जमाता है और वहाँ का शासक बनने में सफल होता है। यह उसकी
व्यक्तिगत सफलता नहीं है वरन् राष्ट्रवादी शक्तियों की सफलता है जो चाणक्य
के निर्देशानुसार काम कर रही थीं। स्वयं चंद्रगुप्त भी चाणक्य का शिष्य था।

'चंद्रगुप्त' नाटक की (कथा) वस्तु में एक रोमांटिक स्पर्श है। प्रसाद जी ने सुदूर अतीत की यात्रा करके संधिकालिक इतिहास से कथानक चुना है। इसका एक कारण भी था। वे स्वतंत्रता के लिए व्यक्ति को संघर्ष करता दिखाना चाहते थे। वे चाहते थे कि भारतीय इस बात को समझें कि व्यक्ति बहुत पहले से ही अपनी स्वतंत्रता को लेकर सजग है और इसके लिए उसने काफी बलिदान किया है। जिन प्रसंगों के बारे में इतिहास ने लगभग मौन धारण कर लिया है, प्रसाद जी ने उसे भी उठाया है। अपनी कल्पना से उन्होंने उन्हें ऐसा रूप दिया है कि मानवीय संवेदनायें मुखरित होती हैं। जहाँ इतिहासकार सिल्यूकस पुत्री कार्नेलिया से चंद्रगुप्त के विवाह को एक पराजित सेनापति द्वारा विजेता को दिया गया उपहार सिद्ध करते हैं तो प्रसाद जी ने इसे स्वाभाविक अनुराग की प्रेम में परिणति दिखाई है। यही नहीं, मालविका नामक एक काल्पनिक पात्र का सृजन कर प्रसाद जी ने चंद्रगुप्त के चरित्र में वीर और श्रृंगार रस का सामंजस्य स्थापित किया है। 'चंद्रगुप्त' का कथानक अत्यंत प्रभावशाली है। प्रसाद जी ने 'चंद्रगुप्त' की रचना करते समय विशाख के संस्कृत नाटक 'मुद्राराक्षस' और डी० एल० राय के बंगला नाटक 'चंद्रगुप्त' का प्रभाव आत्मसात किया किन्तु उसे अपने तरीके से प्रस्तुत किया।

'चंद्रगुप्त' नाटक में प्रसाद जी ने तक्षशिला के गुरुकुल से नाटक का प्रारम्भ किया है। स्पष्ट है कि शिक्षण संस्थान में युवाजन से सामना होगा। देश का युवा यदि सजग, सतर्क है तो देश की उन्नति को कोई रोक नहीं सकता। तक्षशिला शिक्षा का केन्द्र थी और मगध जैसे राज्य से राजकीय वृत्ति पर वहाँ पढ़ने के लिए युवाओं को भेजा जाता था। चाणक्य को यह वृत्ति सम्भवतः नहीं मिली थी क्योंकि उसने वहाँ स्नातक की शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात दो वर्षों तक अध्यापन करके गुरु दक्षिणा चुकाई। विद्या का केन्द्र होने के साथ-साथ तक्षशिला में राजनीति हलचलों पर भी निगाह रखी जाती थी जैसा कि सिंहरण कहता है कि मुझे यहीं रहकर तक्षशिला की राजनीति पर 'दृष्टि रखने' की आज्ञा मिली है। तक्षशिला नरेश यवनों के उत्कोच (घूस) लेकर उन्हें अपने राज्य से जाने दे देते हैं और पर्वतेश्वर से बैर के कारण उसके विरुद्ध सिकंदर की सेना का साथ देते हैं। पर्वतेश्वर के प्रति व्यक्तिगत द्वेष के कारण राष्ट्र की सुरक्षा को वे तिलांजलि दे देते हैं। प्रसाद जी यहाँ यह उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि भारत यदि विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा पददलित हुआ तो क्यों हुआ स्पष्ट है, आंतरिक फूट के कारण हुआ। गांधार के राजकुमार आम्भीक अपने उद्धत स्वभाव और लालच वृत्ति के कारण चंद्रगुप्त और सिंहरण दोनों से तिरस्कृत होता है।

स्नातक की परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के पश्चात चंद्रगुप्त मगध जाता है और नंद की सभा में चाणक्य के अपमान के विरोध में आवाज उठाने के कारण मगध से निर्वासित होता है। नंद की सभा में चाणक्य अपमानित होने के पश्चात शिखा खोलकर अपनी प्रतिज्ञा करता है नंद वंश के समूल नाश की। चाणक्य अपनी बुद्धि बल से और चन्द्रगुप्त अपने बाहुबल से कैसे इस प्रतिज्ञा को पूर्ण करते हैं यही चंद्रगुप्त नाटक की मुख्य कथा है। इसके साथ-साथ ही सिकंदर को भारत की भूमि से प्रत्यावर्तित करने का उद्देश्य भी चंद्रगुप्त और चाणक्य पूर्ण करते हैं।

सिकंदर की सैनिक शक्ति का परिचय प्राप्त करने के लिये चंद्रगुप्त सिल्यूकस के साथ उसके सैन्य शिविर में कुछ समय बिताता है और फिलिपस (सिकंदर का क्षत्रप) से विवाद होने के पश्चात वहाँ से बाहर निकल आता है। पर्वतेश्वर के विरुद्ध युद्ध में वह सिकन्दर को हराने के लिए स्वेच्छा से उन्मुक्त होता है। यहाँ प्रसाद जी यह दिखाने में सफल होते हैं कि भारत के वीर जब क्षेत्रीयता और निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्रहित की बात सोचेंगे तो भारतवर्ष को कोई पददलित नहीं कर सकता। इस युद्ध में मगध की राजकुमारी भी एक छोटे से समूह के साथ शामिल होती है, यह प्रसाद जी की कल्पना का प्रमाण है। इसका समाधान करने के लिए वे यह बताने की चेष्टा करते हैं कि कल्याणी छद्म वेश में इस युद्ध में शामिल हुई थी।

सिकंदर मगध पर आक्रमण से विमुख होकर वापस लौट जाता है, इस वापसी के क्रम में रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गई थी। वह अपने जीते हुए प्रदेशों का क्षत्रप सिल्यूकस को बना गया था। मगध पर शासन करने के प्रारंभिक वर्षों में चंद्रगुप्त को दुबारा यूनानी सेना से दो-दो हाथ करना पड़ा और इसमें भी वह विजयी रहा। इस विजय के उपरांत उसे अपनी जीवन संगिनी प्राप्त होती है। प्रसाद जी ने अपने नाटकों में सदैव नायक-नायिका का मेल नहीं दिखाया है। इस नाटक में भी चंद्रगुप्त पर अनुरक्त दो स्त्री पात्र - मालविका और कल्याणी का असमय अंत हो जाता है। मालविका तो काल्पनिक पात्र थी उसकी कथानक में आवश्यकता समाप्त हो जाने पर उसका सहसा अंत करना नाटककार के लिए अनिवार्य हो गया था किन्तु मगध की कुमारी नंद की पुत्री कल्याणी का अंत कथावस्तु की दुर्बलता है। नंद का अंत चंद्रगुप्त द्वारा न कराकर शकटार से कराना भी 'चंद्रगुप्त' नाटक के कथावस्तु में मौलिक झुमाव है। ~~पर्वतेश्वर का~~ कल्याणी का अंत कराकर जिस निश्चिंतता से चाणक्य कहता है कि 'चंद्रगुप्त! आज से तुम निष्कंटक हुए', उससे ऐसा लगता है कि नाटककार भी निश्चिंत हो गया है। घटनाओं की सघनता और पात्रों का चरित्र उभारने के क्रम

में नाटककार ने कई पात्रों का समायोजन कर लिया था | नाटक की चरम सीमा तक आते-आते उनमें से कुछ पात्रों का निष्क्रमण कराना जरूरी हो गया था | ऐसे में आत्महत्या अथवा हत्या ही एकमात्र उपाय शेष रह जाता है | प्रसाद जी ने ~~मालि~~ मालविका की हत्या चंद्रगुप्त को बचाने के लिए उसके शयन कक्ष में करा दी और कल्याणी ने ~~[illegible]~~ पर्वतेश्वर से प्राप्त अपमान की लज्जा में आत्महत्या कर ली | लेकिन प्रसाद जी की कल्पना से उद्भूत एक पात्र सिंहरण संपूर्ण नाटक में छाया रहता है और उसके प्रभाव में वृद्धि भी करता है |

• चंद्रगुप्त नाटक में सिर्फ युद्ध क्षेत्र ही नहीं है, प्रेम प्रसंग भी है | राक्षस - सुवासिनी का प्रेम; अलका - सिंहरण का प्रेम, विष्णुगुप्त (चाणक्य) सुवासिनी का कैशोर्य का प्रेम, चंद्रगुप्त - कार्नेलिया का प्रेम तथा मालविका और कल्याणी का चंद्रगुप्त के प्रति प्रेम यह सभी इस नाटक के कथानक में सुघड़ता से पिरोये गये हैं | फिर भी इस नाटक के पूरे परिवेश पर राष्ट्र प्रेम उमड़ घुमड़ कर छाया हुआ है | राष्ट्र के प्रति प्रेम, भक्ति और समर्पण यही इस नाटक का मूल कथ्य है | यह इस नाटक में इस हद तक रमा हुआ है कि प्रसाद जी ने राष्ट्र से ऊपर किसी को नहीं माना है | स्वयं महाराज के पिता भी राष्ट्र से ऊपर नहीं हैं | चंद्रगुप्त के पिता सेनापति मौर्य को दण्डित होने से चाणक्य बचा लेता है जबकि चंद्रगुप्त उन्हें दंड देने को उद्यत था | चंद्रगुप्त ऐसा करके एक उदाहरण प्रस्तुत करता है कि न्याय सबके लिए बराबर है | चाणक्य की राजनीति के सिद्धांत सार्वजनीन और सार्वकालिक हैं अर्थात सभी काल में सभी के लिए उपयुक्त हैं | प्रसाद जी ने 'चन्द्रगुप्त' नाटक की वस्तु में राष्ट्रप्रेम का उच्च आदर्श ~~पाठकों के समक्ष रखा है~~ समाहित किया है | ऐसा करते समय उनकी दृष्टि वर्तमान पर थी | अतीत से श्रेष्ठ उदाहरण लेकर उन्होंने देश और काल के समक्ष खड़े प्रश्नों के समाधान की चेष्टा की है |

विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग
श्री गुरु गोबिन्द सिंह कॉलेज
पटना सिटी